विश्व पर्यावरण दिवस

05 जून 2021

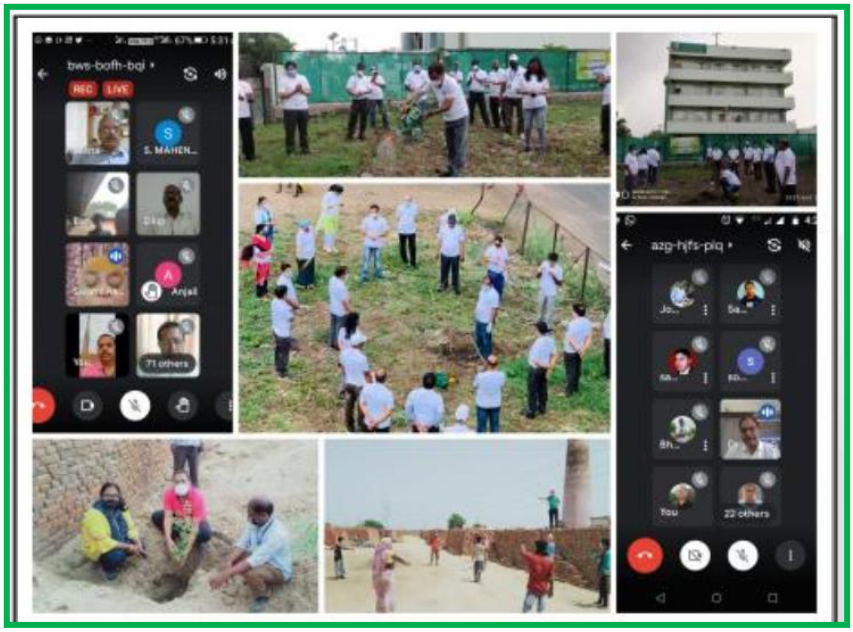

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

क्षेत्रीय निदेशालय (मध्य)

भोपाल

विश्व पर्यावरण दिवस प्रतिवेदन

(04 जून से 07 जून 2021)

संयुक्त कदम उठाने हेतु, एक मंच

विश्व पर्यावरण दिवस दुनिया भर में पर्यावरण के संरक्षण व जन जागरूकता हेतु कदम उठाने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित किया जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण दिन है। 1974 में अपनी शुरुआत से लेकर अब तक पर्यावरण दिवस लोगों तक पहुंचने का एक व्यापक मंच बन चुका है और यह 100 से अधिक देशों में व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस की थीम

विश्व पर्यावरण दिवस मनाए जाने से पहले हर साल के लिए एक थीम का चयन किया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की थीम 'पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली' (Ecosystem Restoration) है। जंगलों को नया जीवन देकर, पेड़-पौधे लगाकर, बारिश के पानी को संरक्षित करके और तालाबों का निर्माण करके हम पारिस्थितिकी तंत्र को फिर से रिस्टोर कर सकते हैं।

पारिस्थितिक तंत्र की बहाली का अर्थ है मानवीय गतिविधियों से होने वाले नुकसान को रोकना और हमारी प्रकृति को संरक्षित करना है। इस विश्व पर्यावरण दिवस 2021 में पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर संयुक्त राष्ट्र दशक का शुभारंभ होगा। हर दिन दुनिया बहुत सारे जंगल खो देती है, और पिछली सदी में, हमने अपनी आधी आर्द्र भूमि को नष्ट कर दिया है। इस साल का मिशन जंगलों से लेकर खेतों तक अरबों हेक्टेयर को पुनर्जीवित करना है, और पहाड़ों और गहरे पानी के महासागरों को भी संरक्षित करना है।

पर्यावरण बहाली क्या है?

पारिस्थितिक तंत्र की बहाली का अर्थ है पिछले कई वर्षों में नष्ट हो चुके पारिस्थितिक तंत्रों की बहाली में सहायता करना, साथ ही उन पारिस्थितिक तंत्रों का संरक्षण देना जो अभी भी मौजूद हैं। समृद्ध जैव विविधता के साथ स्वस्थ पारिस्थितिक तंत्र अधिक लाभ प्रदान करते हैं, जैसे कि अधिक उपजाऊ मिट्टी, लकड़ी और अनाज की अधिक पैदावार। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दुनिया भर के 70 से अधिक देशों द्वारा कार्रवाई के प्रस्ताव और प्रस्ताव के बाद पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर संयुक्त राष्ट्र दशक की घोषणा की है। संयुक्त राष्ट्र का दशक 2021 से 2030 तक चलना है, जो कि सतत विकास लक्ष्यों की समय सीमा भी है। यह स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर केन्द्रित हो सकता है तथा इसमें अकेले व्यक्ति के द्वारा भी सहयोग व सहभागिता की जा सकती है और वैश्विक स्तर पर जुड़ाव महसूस किया जा सकता है।

मेज़बान

प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेज़बानी विश्व का कोई भी एक देश करता है, जहां विभिन्न समारोह आयोजित किए जाते हैं। मेज़बान देश पर ध्यान केंद्रित होने से इसकी पर्यावरणीय चुनौतियां सामने आती हैं और उनसे निपटने के प्रयासों को बल मिलता है।

विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी दुनिया भर के विभिन्न देशों द्वारा की जाती है। इसमें सालाना 143 से अधिक देशों की भागीदारी है। पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) के सहयोग से विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की मेजबानी कर रहा है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने 4 जून की रात को इस्लामाबाद में विश्व पर्यावरण दिवस सम्मेलन का शुभारंभ किया, इतिहास में यह पहली बार है कि पाकिस्तान आधिकारिक तौर पर इस दिन की मेजबानी करेगा। पाकिस्तान उन पहलों से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण घोषणाएं करेगा जो उसने जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए की हैं , जिसमें 10 बिलियन पेड़ सुनामी प्रोग्राम, क्लीन ग्रीन पाकिस्तान, इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी, नेशनल पार्क और ग्रीन जॉब शामिल हैं। वर्ष 2018 में, भारत ने प्लास्टिक प्रदूषण पर ध्यान देने के साथ विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी की।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल ने भी विश्व पर्यावरण दिवस 2021 के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम व रुचिकर गतिविधियां आयोजित की। क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा इसके अन्तर्गत ऑनलाइन संगोष्ठी, पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली - चर्चा , वृक्षारोपण व ऑनलाइन कार्यशाला आदि का आयोजन किया गया।

कोरोनावायरस ने पर्यावरण को कैसे प्रभावित किया?

घातक कोरोनावायरस के वैश्विक प्रकोप ने मानव जीवन और दैनिक गतिविधियों को प्रभावित किया है, लेकिन इसने वायु की गुणवत्ता में सुधार किया है और जल प्रदूषण को कम किया है। लॉकडाउन के तहत अधिकांश शहरों के साथ , कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी आई है , जिसने पारिस्थितिक तंत्र को स्वतः बहाल कर दिया है। लेकिन महामारी के दौरान कीटाणुनाशक , मास्क, दस्ताने जैसे चिकित्सा कचरे का निपटान और अनुपचारित कचरे का बोझ भी कई गुना बढ़ गया है। इसके अलावा, एक बार जब स्थिति सामान्य हो जाती है , तो पर्यावरण फिर से प्रदूषित होना शुरू कर सकता है। वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता के लिए दीर्घकालिक लक्ष्य और रणनीतियों और नीतियों का उचित कार्यान्वयन समय की आवश्यकता है।

ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन

जब भी विश्व पर्यावरण दिवस की बात आती है तो लोगों के बीच ग्लोबल वार्मिंग (Global warming) और जलवायु परिवर्तन (Climate Change) की चर्चा होने लगती है । बहुत से लोगों को दोनों ही चीजें एक सी लगती हैं , लेकिन ऐसा नहीं है । ग्लोबल वार्मिंग का मतलब वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण पृथ्वी की सतह का तापमान बढ़ जाना है । दूसरी ओर , जलवायु परिवर्तन वो पहलू है , जो समुद्र स्तर के बढ़ने , ग्लेशियरों के पिघलने, उष्णकटिबंधीय तूफानों के बढ़ने , कोरल रीफ के घटने और भयानक गर्मी की वजह से ग्लोबल वार्मिंग के रूप में सामने आता है । इन सबके होने की वजह मानव द्वारा किए जाने वाले कार्य हैं।

पर्यावरण और सतत विकास लक्ष्य

संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा हमारे संकल्प "ग्रह और उसके प्राकृतिक

संसाधनों की स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए" बताता है। सतत विकास के इस एजेंडे बिन्दु 14 और 15 में विशेष रूप से पानी, भूमि और पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा के साथ-साथ समुद्री और स्थलीय संसाधनों का उचित उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सन् 1972 में 05 जून से 16 जून तक मानव पर्यावरण पर शुरू हुये सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र आम सभा तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के द्वारा कुछ प्रभावकारी अभियानों को प्रारंभ करने तथा हर वर्ष पर्यावरण दिवस मनाने की कल्पना की थी। इसे पहली बार 1973 में 'केवल धरती' थीम के साथ मनाया गया था तथा 1974 से दुनिया के विभिन्न शहरों में विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी प्रारंभ की गई। संपूर्ण विश्व में जन-सामान्य को जागरूक बनाने के साथ ही कुछ सकारात्मक पर्यावरणीय कार्यवाही को लागू करने तथा पर्यावरणीय मुद्दों को सुलझाने के लिये तथा हरित पर्यावरण के महत्व के बारे में वैश्विक स्तर पर जन-जागरूकता लाना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। पर्यावरण की सुरक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार या निजी संगठनों की ही नहीं , बल्कि संपूर्ण समाज की है, यह संदेश भी विश्व पर्यावरण दिवस के माध्यम से देने का प्रयास किया जाएगा।

उपरोक्त बैठक में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा भाग लिया गया था, श्रीमती गांधी के स्वदेश वापसी के बाद से ही पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में संवैधानिक प्रावधानों को लागू करने का कार्य प्रारंभ हुआ। इसके बाद हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाते हुए प्रारंभिक रूप में जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम , 1974 तत्पश्चात वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम , 1981 लागू किया गया तथा कालांतर में समय व परिस्थिति के अनुसार विभिन्न प्रदूषणकारी तत्वों की जलिटताओं के आधार पर समुचित प्रबंधन हेतु सर्वमान्य व प्रभावी कानून बनाए गए। पर्यावरण संबंधी नियमों के अनुपालन की जिम्मेदारी राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा राज्य स्तर पर राज्य सरकारों एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को प्रदान की गई है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण , प्रदूषण मापन व नियंत्रण के क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यों का सम्पादन करता है। बोर्ड के विभिन्न कार्यों में एक कार्य जन-सामान्य को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना तथा व्यक्तिगत स्तर से संस्थागत स्तर तक पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना भी है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें पर्यावरण संरक्षण के वर्तमान मुद्दे जैसे- नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन , मल-जल प्रबंधन, औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण, वन संरक्षण, जलवायु परिवर्तन आदि पर जन-जागरूकता की जाती रही है तथा प्रत्येक वर्ष संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संगठन द्वारा घोषित थीम व स्थानीय आवश्यकता के आधार पर पर्यावरण दिवस कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जाती है।

क्षेत्रीय निदेशालय , केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड , भोपाल द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों की श्रंखला का आयोजन दिनांक 04.06.2021 से 07.06.2021 के मध्य किया गया चूंकि इस वर्ष कोरोना वाइरस के संक्रमण की प्रबल संभावना के कारण व भारत सरकार के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किसी भी तरह के सार्वजनिक आयोजन नही किया गया यद्यपि सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करते हुए व इलेक्ट्रोनिक माध्यम की सहायता से इस कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया । इसमें निम्नलिखित कार्यक्रमों की श्रंखला आयोजित की गई-

<u>वृक्षारोपण कार्यक्रम (04.06.2021)</u>

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय निदेशालय , भोपाल के परिसर में दिनांक 04.06.2021 को वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय निदेशक श्री पी.जगन द्वारा परिसर वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण पश्चात् सभी उपस्थितों ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी शपथ ली तथा क्षेत्रीय निदेशक द्वारा उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित किया तथा पर्यारण संरक्षण में हमारे प्रयास किस तरह सहायक हैं इस बाबत् जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर उपस्थित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये व वृक्षों के महत्व पर चर्चा की। क्षेत्रीय

निदेशालय भोपाल की ओर से डॉ. आर.पी.मिश्रा वैज्ञानिक घ व श्री राजीव शर्मा द्वारा भी इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए।

क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल का एक उत्तरप्रदेश गया हुआ है , जहां पर्यावरण दिवस पर उनके द्वारा वृक्षारोपन किया गया तथा उस क्षेत्र के सभी ईट भट्टों के कर्मियों के मध्य पर्यावरण जन जागरूकता कार्य किया तथा उन्हे मृदा संरक्षण के बारे मे विशेष जानकारी प्रदान की गई।

आठ सदस्यीय दल ईट भट्टों मे प्रबोधन करने हेतु अलीगड़,

वेबीनार (04 & 05 **June** 2021):-

आज के समय मे समाज में त्वरित संदेश पहुचाने हेतु सोशल मीडिया का बहुत योगदान है इसी बात को ध्यान में रखते हुए कार्यालय द्वारा तीन वेबीनार का आयोजन दिनांक 04 व 05 जून 2021 को किया गए, जिसका विवरण निम्न है :-

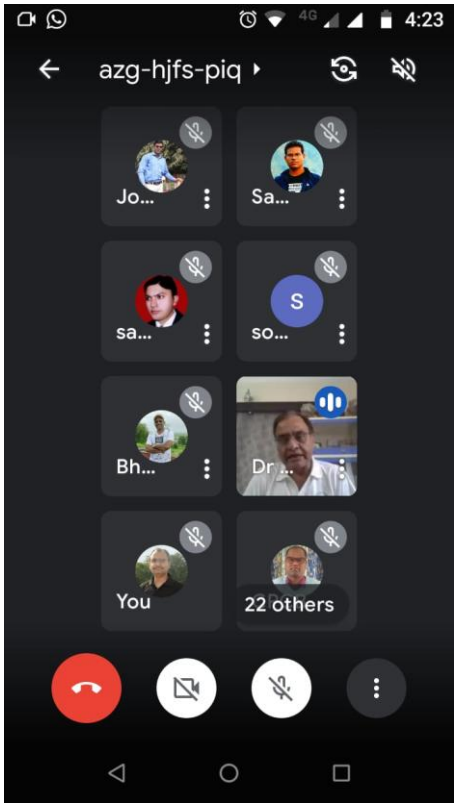

मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर तथा नर्मदा समग्र प्रकल्प द्वारा संयुक्त रूप से वेबि नार के माध्यम से पर्यावरण दिवस तथा संगोष्ठि का आयोजन 04.06.2021 को किया जिसमे इस कार्यालय के डॉ.वाय.के.सक्सेना वैज्ञानिक ग द्वारा गोकाष्ट के माध्यम से किस तरह वृक्ष का संरक्षण कर रहे है इस बाबत जानकारी प्रदान की।

सेंट्रल रेल्वे कोच रीहेबीटेशन केंद्र भोपाल द्वारा वेबि नार के माध्यम से पर्यावरण दिवस तथा संगोष्ठि का आयोजन 04.06.2021 को किया जिसमे इस कार्यालय के डॉ.वाय.के.सक्सेना वैज्ञानिक ग द्वारा गोकाष्ट के माध्यम से किस तरह वृक्ष का संरक्षण कर रहे है इस बाबत जानकारी प्रदान की।

उक्त वेबिनर में रेल्वे कोच रीहेबीटेशन केंद्र के सभी स्तर के अभियंताओ द्वारा सहभागिता की गई।

क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल द्वारा भी इस बार की थीम 'पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली' विषय पर वेबिनर का आयोजन दिनांक 05.06.2021 को 'पर्यावरण मंथन श्रंखला' के अंतर्गत किया तथा इसे विषय विशेषज्ञ डॉ.आर.पी.मिश्रा वैज्ञानिक घ द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किए गए। उन्होने बताया की एक ओर प्रचुरता की दुनिया है जहाँ समृद्धता प्रदूषण फैलाती है , दूसरी ओर अभावों की दुनिया है जहाँ विपन्नता के कारण जीवन-स्तर नीचे गिरता है। इस प्रकार विभिन्न भागों में बटा यह ग्रह प्रकृति और पर्यावरण के साथ समरसता नहीं बनाए रख पा रहा है।

वही हम प्रकृति से कितना लें जो हमारे गुजारे के लिए आवश्यक हो और कितना छोड़ें कि पृथ्वी के भविष्य के लिए अनिवार्य हो , इन दोनों के बीच हमें सन्तुलन कायम करना होगा। आज यह स्पष्ट हो चला है कि हम विकास के वायदे के बिना पर्यावरण का संरक्षण नहीं कर सकते और पर्यावरण के संरक्षण के बिना हम स्थाई विकास भी नहीं कर सकते। जिन देशों के औद्योगिक विकास का स्तर ऊँचा नहीं है , वे भी पर्यावरण-संरक्षण में बहुत योगदान कर सकते हैं। वहाँ के लोगों का प्रकृति के साथ घनिष्ठ ता रत्म्य तथा सम्बन्ध है और उन्होंने पारम्परिक एवं जड़ी-बूटी चिकित्सा पद्धति , जल संचय तथा प्रबंध जैसे क्षेत्रों में अपने संसाधनों का अधिकाधिक इस्तेमाल करना सीख लिया है।

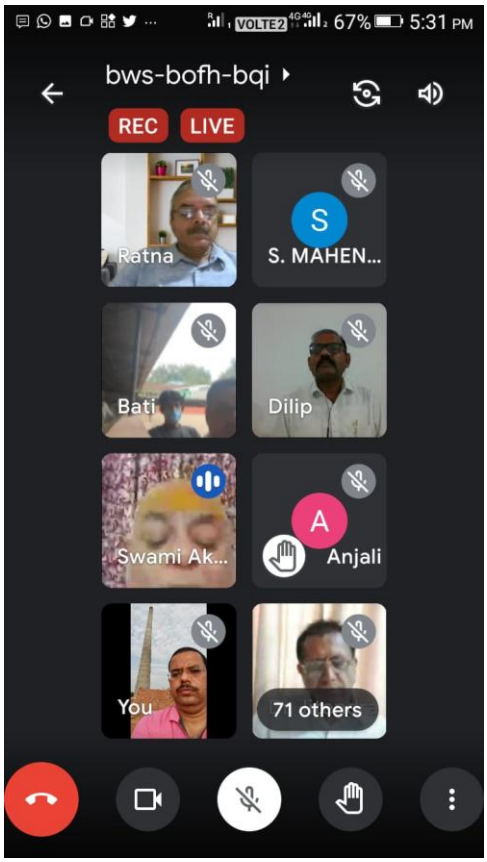

डॉ. मिश्रा द्वारा यह भी बताया गया की 'पारिस्थितिकी तंत्र का हमारे जीवन में काफी महत्व है। ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र जो जैव विविधता में समृद्ध है, टिकाऊ आर्थिक गतिविधियों के लिए, विकल्पों के सबसे वृहद अवसर प्रदान करती है। जैव विविधता के ह्रास से प्रायः परितंत्र की उत्पादकता कम हो जाती है , जिसके कारण विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने संबंधी उनकी क्षमता भी कम हो जाती है , जिनका हम लगातार उपभोग करते हैं। इससे परितंत्र में अस्थिरता आती है और प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ , सूखा और तूफान एवं मानव जनित दबावों जैसे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है। वातावरण में तीव्र गति से होते नकारात्मक बदलाव के कारण बहुत से पेड़- पौधे और पशु- पक्षी विलुप्त हो चुके हैं जिससे जैव विविधता को बनाये रखने के स्तर में भी काफी गिरावट आई है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि मानव के अस्तित्व को बचाये रखने के लिए और अपने

वातावरण की शुद्धता के लिए इन नकारात्मक बदलावों को काबू किया जाये।

इस वेबीनार का समापन श्री पी.जगन क्षेत्रीय निदेशक द्वारा किया गया तथा अपने उद्बोधन मे उन्होने पा रिस्थितिक तंत्र के सही संतुलन बनाने पर ज़ोर दिया। वातावरण में हुए बदलाव जिसके कारण जैव विविधता को बनाये रखने में गिरावट आयी है उन्हे सुधारने की आवश्यकता है । यह बिगड़ते हालात हमारे मनुष्य जीवन के लिए किसी खतरे से कम नहीं है। भौगोलिक परिस्थितियों पर ध्यान देना जरूरी है ताकि जैव विविधता के लिए कोई संकट उत्पन्न न हो और जीव- जन्तुओं , पेड़- पौधों के जीवन पर भी किसी तरह का कोई खतरा नहीं आये।

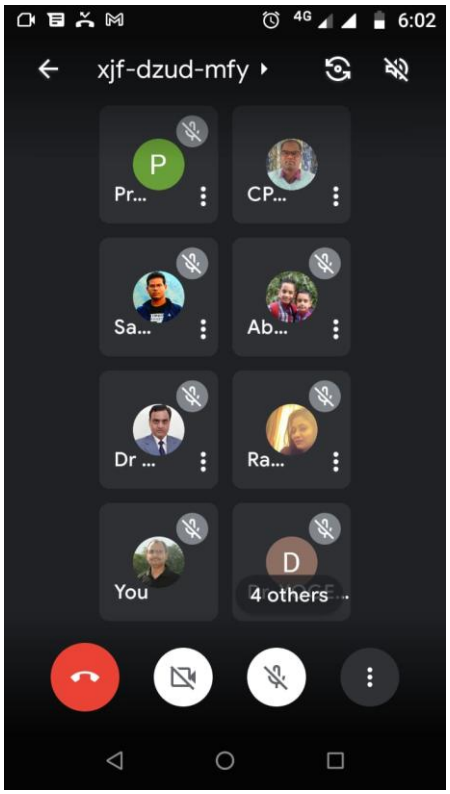

इस वेबीनार का आयोजन कार्यालय मे उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही किया गया है। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ.अनूप चतुर्वेदी व डॉ.पोलोमी पाटिल द्वारा किया गया। उक्त वेबिनार मे मुख्यालय दिल्ली सहित लखनऊ व कोलकाता के वैज्ञानिकों ने भी साहभागिता की।

<u>ऑनलाइन संगोष्ठी (07.06.2020)</u> -

पर्यावरण दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 07.06.2021 को किया गया, जिसका विषय 'मध्य क्षेत्र मे पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के श्रेष्ठ उदाहरण' था जिसके दौरान जयपुर की द्रव्यवती नदी के पुनरुद्धार, रतलाम क्षेत्र के डम्प साइट के पुनरुद्धार , भोपाल के कुछ क्षेत्रों मे किए गए सघन वृक्षारोपन तथा ठोस अपशिस्ठ के प्रभावी प्रबंधन से रिक्त हुय क्षेत्र के पुनरुद्धार के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ.अनूप चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

इस ऑनलाइन संगोष्ठी मे की गई चर्चा को श्री पी.जगन क्षेत्रीय निदेशक द्वारा सारगर्भित किया गया तथा इस वर्ष के कार्यक्रम समाप्ती की घोषणा की।

<u>सोशल मीडिया</u> : वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी विचारों के आदान-प्रदान व जन-जागरूकता के क्षेत्र में प्रभावी योगदान है। कार्यालय द्वारा की गई गतिविधियों को भी केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकृत ट्विटर अकाउंट से साझा किया गया है तथा इसे व्यापक

समर्थन मिला है तथा अनेक व्यक्तियों द्वारा इसे सराहा गया है व कार्यालय के पर्यावरण दिवस संबंधी कार्यों की प्रशंशा की है।

<u>उपसंहार :-</u>

क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 2021 के अवसर पर दिनांक 04.06.2021 से 07.06.2021 के मध्य अनेक कार्यक्रम आयोजीत किए गए जिसमें कार्यालय के प्रत्येक व्यक्ति ने पूरे मनोयोग के साथ कार्यक्रमों में सहभागिता की । व्यापक जन-जागरूकता हेतु व पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य को अनवरत् बनाए रखने के उद्देश्य से संगोष्ठी, पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली पर वेबीनार व वृक्षारोपण आदि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यालय द्वारा पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से तथा इस वर्ष की संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी थीम 'पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली' के अनुसार व्यापक जन जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण दिवस का अंतिम उदेश्य पाने हेतु सतत कार्य करने का संकल्प किया। कार्यालय द्वारा वर्ष भर इस तरह के अन्य कार्यक्रमों को संपादित करने हेतु कार्य योजना भी बनाई तथा दूरस्थ क्षेत्रों में भी इसका प्रचार-प्रसार करने हेतु संकल्प लिया, क्योंकि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड स्वच्छ पर्यावरण के लिये सदैव प्रतिबद्ध है .....।

पी.जगन
क्षेत्रीय निदेशक, भोपाल